विद्या भवन बालिका विद्यापीठ लखीसराय

वर्ग दशम् विषय संस्कृत शिक्षक श्यामउदय सिंह

ता:-११/११/२०२० (एन.सी.ई.आर.टी.पर आधारित)

पाठ:-नवम: पाठनाम सूक्तय:

श्लोक:

त्यक्त्वा धर्मप्रदां वाचं परुषां योऽभ्युदीरयेत् ।
परित्यज्य फलं पक्वं भुङ्क्तेऽपक्वं विमूढधी:।।

अन्वय:

य: धर्मप्रदां वाचम् परुषां (वाचं) अभ्युदीरयेत् (स:)विमूढधी: पक्वं फलं
परित्यज्य अपक्वं (फलं) भुङ्क्ते।

शब्दार्था:

अवक्रता – सरलता , यथा – जैसे , चित्ते – मन में
तथा – वैसे , भवेद् – हो, तदेव – वही , आहु: - कहते हैं
महात्मान: - महात्मा लोग , समत्वम् – समानता , वाचि – वाणी में
तथ्यत: - वास्तव में

अर्थ

मन में जैसी सरलता हो वैसी ही यदि वाणी में हो तो उसे ही महात्मा लोग वास्तव में समानता कहते हैं।